राज
कॉमिक्स
विशेषांक
संख्या 0003

खूनी हवेली का रहस्य

खूनी हवेली का रहस्य

चित्रांकन: जगदीश पंकज
कथानक: तरुण कुमार
सम्पादक: मनीष चन्द्र 'गुप्त'

ठाकुर वीर सिंह के चार पुत्र थे। तीनों बड़े पुत्र हीरा सिंह, हरनाम सिंह और जसवन्त सिंह अलग-अलग शहरों में अपने व्यवसायों में लीन थे, इन्हें ठाकुर साहब के बनाए नियमों से सख्त नफरत थी। लेकिन मन ही मन वे उनका बेहद सम्मान करते थे। जबकि चौथा पुत्र गिरिराज शहर में डाक्टरी की शिक्षा प्राप्त करने के बाद कुछ ही दिनों में अपने गांव प्रतापगढ़ पहुंचने वाला था।

एक दिन हवेली के भीतर ठाकुर साहब अपनी बीवी की तस्वीर से बातें कर रहे थे...

राधा अपना गिरिराज कल हमारे गांव लौट रहा है। अब तुम्हारी इच्छा पूरी होगी। राधा अब देखना इस गांव का कोई भी व्यक्ति बीमारी के इलाज के अभाव में नहीं मरेगा।

और तभी...

ओह! यह बिजली को एकाएक क्या हुआ?

अभी वे कुछ समझे भी नहीं थे कि तभी कमरे में खिडकी का शीशा टूटने की एक जबर्दस्त... आवाज हुई।
छनाक
किसी अनजानी आशंका से ठाकुर वीरसिंह ऊंचे स्वर में चिल्ला उठे।
क... कौन है उधर? कौन...ओह, नहीं।
ईईईऽऽ
हवेली का सबसे पुराना एवं ठाकुर साहब का वफादार नौकर सुखिया...
अरे! यह चीख तो ठाकुर साहब की है! क्या हुआ, मालिक को?
सुखिया शीघ्रता से दरवाजा खोल कर ठाकुर साहब के शयन कक्ष में दाखिल हुआ। तभी बिजली आ गई...
न... नहीं! खून... खून... खून...
वह भागता हुआ फोन के करीब पहुंचा और...
ह...हैलो...हैलो, पुलिस स्टेशन! मैं ठाकुर वीरसिंह की हवेली से उनका नौकर सुखिया बोल रहा हूं। आप तुरन्त यहां पहुंचिए साहब। किसी ने ठाकुर साहब का कत्ल कर दिया है।

खूनी हवेली का रहस्य

कुछ ही देर में पुलिस वहां आ पहुंची।

ओह! हत्यारे ने बड़ी निर्ममता से ठाकुर साहब का गला दबा कर उन्हें मार डाला है। क्या ठाकुर साहब की किसी से दुश्मनी थी?

नहीं साहब, वह तो बड़े देवता आदमी थे। उनकी किसी से क्या दुश्मनी हो सकती है।

हुम्म! हवेली में तुम्हारे अलावा और कौन-कौन रहता है?

कोई नहीं साहब! ठाकुर साहब के तीन लड़के तो अलग-अलग शहरों में काम करते हैं और चौथा लड़का पढ़ाई करने शहर गया हुआ है... हवेली में मेरे और ठाकुर साहब के सिवाय... तीसरा कोई नहीं रहता...

ठीक है! तुम उनके लड़कों को इस घटना की सूचना देकर यहां बुला लो। तब तक हम कातिल का पता लगाने की कोशिश करते हैं।

अच्छी तरह से जांच पड़ताल करने के बाद पुलिस ने लाश को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

पुलिस के जाने के बाद...

अब मुझे मालिक के बेटों को यह दुखदायी सूचना दे देनी चाहिए।

बहुत अच्छा साहब!

और फिर दूसरे ही दिन ठाकुर साहब के चारों बेटे हवेली पहुंच गए।

आप सब आ गए। बहुत अच्छा हुआ। मेरा तो अकेले में दम घुटा जा रहा था।

लेकिन सुनिया, पिताजी को हुआ क्या था?

क्या बताएं बेटे मालिक! रात मालिक खाना खा कर अपने कमरे में गए ही थे कि बिजली गई और फिर कुछ क्षणों बाद एकाएक उनकी चीख सुनाई दी...!

...चीख सुन कर मैं दौड़ा-दौड़ा मालिक के कमरे में गया और फिर बिजली आने पर ठाकुर साहब मुझे मृत अवस्था में जमीन पर पड़े मिले।

सुनिया ने अभी अपनी बात खत्म ही की थी कि तभी कमरे में इन्सपेक्टर रमण दाखिल हुआ।

आइए इंस्पेक्टर साहब! कहिए क्या रिपोर्ट है?

पोस्टमार्टम की रिपोर्ट के अनुसार ठाकुर साहब की हत्या गला घोंट कर की गई है। लेकिन उनके गले पर आदमी के बजाए शेर के पंजे के निशान मिले हैं।

शेर के पंजे के निशान?

हां! लेकिन आप चिन्ता मत कीजिए। हम कातिल को ढूंढने की पूरी कोशिश करेंगे।

खूनी हवेली का रहस्य

फिर लाश मिलने पर ठाकुर साहब का अन्तिम संस्कार कर दिया गया।

उसके बाद सब उदासी से हवेली लौट आए और रात होते ही अपने-अपने कमरों में चले गए, लेकिन हीरा सिंह की आंखों में नींद नहीं थी...

पिताजी की हत्या के पीछे क्या कारण हो सकता है?

और ठीक उसी क्षण पूरे कमरे में अंधकार छा गया।

ओह! यह अचानक बिजली को क्या हुआ?

मुन्किया ...अरे... आह...ब...चा...ओ...

हीरा सिंह ने खुद को उस पंजे से छुड़ाने की भरपूर कोशिश की, मगर पंजा जोंक की तरह उसकी गर्दन पर चिपक चुका था।

आ...ह।

फिर कुछ ही देर में हीरा सिंह के प्राण पखेरू उड़ चुके थे। और वह पंजा भी कहीं गायब हो गया था।
ठाकुर हीरा सिंह की चीखें सुनकर सभी भागकर उनके कमरे के सामने इकट्ठे हो गए, मगर दरवाजा भीतर से बन्द था।
भइया! दरवाजा खोलो! यह हम हैं आपके छोटे भाई...
जब भीतर से कोई आवाज़ न आई तो जसवन्त शंकित स्वर में बोला-
मुझे कुछ गड़बड़ी लगती है। हमें दरवाजा तोड़ डालना चाहिए।
तुम ठीक कहते हो जसवन्त... दरवाजा तोड़ना ही होगा।
और फिर...
दूसरे ही मिनट बाद दरवाजा चौखट से अलग हो कर गिर पड़ा।
धड़ाम

खूनी हवेली का रहस्य

लेकिन अन्दर पहुंचते ही तीनों सन्न रह गए।

भइयाऽऽऽ

ओह नो!

न...नहीं

जसवन्त, तुम जल्दी से पुलिस को फोन करो।

जसवन्त कमरे से बाहर निकल गया।

हैलो, इन्स्पेक्टर रमण स्पीकिंग।

इन्स्पेक्टर साहब, मैं ठाकुर साहब की हवेली से जसवन्त बोल रहा हूं। आप तुरन्त चले आइए। हीरा भइया का कत्ल हो गया है।

ओह, हम अभी पहुंच रहे हैं। आप किसी भी चीज को छूएं नहीं।

जी अच्छा इंस्पेक्टर साहब।

इन्स्पेक्टर साहब आ रहे हैं। उन्होंने हमें किसी भी चीज को छूने से मना किया है।

उफ! छोटे मालिक को भी मार डाला।

पता नहीं इस हवेली में क्या हो रहा है?

पन्द्रह मिनट पश्चात् इन्स्पेक्टर वहां मौजूद लाश का मुआयना कर रहा था।

हत्या फिर गला घोंट कर की गई है...।

पूरे कमरे का निरीक्षण करने के बाद...

मामला पेचीदा होता जा रहा है। हत्यारे ने इस बार भी कोई सबूत नहीं छोड़ा।

पता नहीं कौन दुश्मन पैदा हो गया हमारा...?

सुखिया तुम बरसों से ठकुर वीर सिंह के साथ रहे हो। याद करो, शायद तुम्हें इन हत्याओं का कोई कारण पता हो?

मैं बरसों से मालिक का नमक खा रहा हूं हुजूर। मैंने आज तक हवेली में कोई ऐसी बात नहीं देखी, जिससे इन सब घटनाओं का संबंध जुड़ सके। मगर...

मगर क्या?

धुंधली सी एक बात याद आती है, आज से पच्चीस बरस पहले, बड़े मालिक का एक औरत के साथ झगड़ा हुआ था। उस औरत की गोद में एक बच्चा भी था। तब वह औरत बड़े मालिक को न जाने क्या-क्या बक कर वहीं चली गई।

लेकिन आज से पच्चीस बरस पहले हुई उस औरत के साथ पिताजी की खटपट का इन हत्याओं से क्या सम्बन्ध?

सम्बन्ध होता नहीं मिस्टर जसवन्त। सबूतों के आधार पर जोड़ा जाता है। खैर... सुखिया, क्या तुम जानते हो कि तब उनके बीच किस किस्म का झगड़ा हुआ था और वह औरत कौन थी?

इस बारे में मैं कुछ नहीं जानता साहब। क्योंकि वह मेरी ड्यूटी का पहला दिन था।

खूनी हवेली का रहस्य

सुरिंदर के खामोश होते ही इंस्पेक्टर रमण ने हवलदार राम सिंह से कहा...

लाश को पोस्टमार्टम के लिए भेज दो और हां आज रात तुम गुप्त रूप से कांस्टेबल कृष्णा के साथ हवेली पर ही पहरा दोगे, अगर कोई खतरे वाली बात दिखाई दे तो तुरन्त मुझे खबर करना।

ओ.के. सर!

हां भई, तरक्की का सवाल है।

अगर आज हत्यारा यहां आया तो हमारे हाथों से बचेगा नहीं।

उधर हवेली के अन्दर हरनाम, जसवन्त एवं गिरिराज

पता नहीं, यह क्या हो रहा है हवेली में? पहले पिताजी की हत्या हुई, फिर बड़े भइया की और लगता है जैसे अब मेरी बारी है।

नहीं, मैं अब इस मनहूस हवेली में नहीं रहूंगा। सुबह होते ही मैं वापिस बम्बई लौट जाऊंगा।

अब यहां रहना ही कौन चाहता है? मैं भी कल कलकत्ता चला जाऊंगा।

भइया का दाह संस्कार कौन करेगा?

हम यह कार्य निबटाकर ही यहां से जायेंगे।

कुछ ही देर में पूरी हवेली सन्नाटे में डूब गई और ठाकुर हरनाम सिंह के कमरे में एक भयानक हाथ उनकी गर्दन की ओर बढ़ रहा था।
तभी अचानक किसी खटके से हरनाम सिंह की नींद खुल गई।
उस रहस्यमय नृशंस हत्यारे ने हरनाम सिंह को कोई भी मौका नहीं दिया और...
भयानक हत्यारे ने धीरे से हरनाम सिंह को अपने कंधे पर डाला... और एक ओर चल पड़ा –
ठाकुर जसवन्त सिंह का भी बुरा हाल था। उसे क्षण प्रतिक्षण मौत करीब आती दिखाई दे रही थी।
म... मुझे हरनाम भइया के पास चलना चाहिए। शायद डर कुछ कम हो जाए।

जसवन्त हरनाम सिंह के कमरे के बाहर पहुंचा
हरनाम भैया!
अन्दर हरनाम का बिस्तर खाली देख कर वह बुरी तरह उछल पड़ा।
अरे! हरनाम भैया कहां गए?
लेकिन जैसे ही वह पीछे मुड़ा, उसके मुंह से एक भयानक चीख निकल गई।
ई ई ईऽऽऽ
हाहाहा
जसवन्त भी नहीं बचा, खूनी पंजे ने उसे भी खत्म कर दिया।
हा..हा..हा.. कोई नहीं बचेगा।
उधर वृक्ष पर बैठे हवलदार राम सिंह और कृष्णा एक तेज चीख को सुन कर चौंक पड़े।
अरे! यह चीख कैसी थी?
अन्दर गड़बड़ी लगती है। चलो चल कर देखें।

चीख सुन कर गिरिराज व सुखिया हरनाम के कमरे की ओर दौड़े, मगर रास्ते में ही वे ठिठक कर रुक गए।

जसवन्त भैया...!

ओह! हत्यारे ने इन्हें भी मार डाला।

सुखिया, हरनाम भइया को जगाओ जल्दी।

अच्छा, छोटे मालिक!

मगर कुछ ही समय बाद वह बदहवास सा भागा चला आया और बुरी तरह हांफते हुए बोला-

कु... छोटे मालिक... छोटे मालिक...। हरनाम मालिक अपने कमरे में नहीं हैं।

क्या बकते हो सुखिया।

वे भागे कर हरनाम सिंह के कमरे में पहुंचे -

ओह नहीं... सुखिया, जल्दी से इंस्पेक्टर रमण को फोन करो।

हे भगवान! यह सब क्या हो रहा है।

राम सिंह और कृष्णा भी वहां आ पहुंचे, वहां के हालात देखते ही उनका माथा ठनका।

इन्हें क्या हुआ?

हत्यारे ने जसवन्त भइया को भी खत्म कर दिया और... हरनाम भाई साहब का भी कहीं पता नहीं है! उफ! मैं क्या करूं?

खूनी हवेली का रहस्य

ओह कृष्णा, साहब को फोन करो।

सुनिया फोन करने ही गया है।

पन्द्रह मिनट पश्चात इंस्पेक्टर रमण वहां पहुंच गया।

आओ, उन्हें बाहर तलाश... करते हैं।

हे प्रभु, वे जहां भी हों सही सलामत हों।

बाहर आ कर वे सब हरनाम सिंह को तलाश करने लगे। तभी एकाएक सुनिया चीख उठा।

साहब, यहां आइए! हरनाम बाबू की लाश यहां कुंए में लटक रही है।

ओह नहीं...

हरनाम सिंह को मृतावस्था में कुंए में लटकता देख गिरिराज सदमे से बेहोश होकर गिर पड़ा।

लाश को कुंए से निकाल कर पुलिस एम्बुलेंस में भेजने के बाद...

हवलदार राम सिंह! तुम गिरिराज को होश में लाओ। तब तक हम हवेली को फिर एक बार चेक करते हैं।

यस सर!

बहुत बारीकी से पूरी हवेली चैक करने के बाद भी उन्हें कोई सबूत हासिल नहीं हुआ।
हत्यारे बेहद चालाक एवं क्रूर है। कहीं कोई सबूत तक नहीं छोड़ा
उधर गिरिराज भी होश में आ चुका था।
भइया तुम भी चले गए। अब इतनी बड़ी हवेली में मैं अकेला कैसे रहूंगा।
चुप हो जाइए मालिक। चुप हो जाइए।
इन्सपैक्टर रमण भी वहां पहुंचे-
मुझे अफसोस है कि मैं कातिल को नहीं पकड़ सका और आपको अपने पिता के बाद अपने भाइयों को भी खोना पड़ा, लेकिन मेरा यकीन करो। मैं जल्दी ही उसे गिरफ्तार कर लूंगा।
नहीं-नहीं इंस्पेक्टर साहब। अब मैं इस मनहूस हवेली में नहीं रहना चाहता, अगर मैं यहां रहा तो वह मुझे भी मार डालेगा। मुझे अपने साथ ले चलिए।
अगर इसे अकेला छोड़ा गया तो कातिल सचमुच इसे मार डालेगा और हम हाथ ही मलते रह जाएंगे।
एकाएक कुछ सोच कर वह प्रसन्न हो उठा-
आहा... एक आइडिया।

खूनी हवेली का रहस्य
ठीक है मिस्टर गिरिराज। फिलहाल तुम हमारे साथ चलो। कल तक मैं कोई न कोई रास्ता खोज ही निकालूंगा।
इन्सपेक्टर गिरिराज को लेकर अपने बंगले पहुंचा
बैठो। यहां तुम आराम से रह सकते हो। कल तक मैं और इन्तजाम कर दूंगा।
धन्यवाद इन्सपेक्टर।
एक ही परिवार में एक के बाद एक चार हत्याएं होने के कारण इन्सपेक्टर रमण भी बहुत चिन्तित था। उसे अभी तक कोई भी सुराग नहीं मिल पाया था जिससे वह हत्यारे तक पहुंच पाता। सारी रात वह बिस्तर पर पड़ा करवटें बदलता रहा।
सुबह...
इस केस में केवल एक ही व्यक्ति मेरी मदद कर सकता है, और वह है प्राइवेट डिटेक्टिव मि. विशाल।
फोन पर विशाल से सम्बन्ध स्थापित होते ही वह बोला
हैलो विशाल मैं इन्सपेक्टर रमण बोल रहा हूं। कृपया तुम तुरन्त यहां चले आओ।
क्या बात है इन्सपेक्टर आज हमारी याद कैसे आ गई?
इस वक्त मुझे तुम्हारी एक केस में सख्त जरूरत है। क्या, तुम आ सकते हो?
जरूर, मगर बात क्या है?

इन्स्पेक्टर रमण ने विनोद को अब तक घटी सभी घटनाओं से संक्षेप में अवगत कराया।

मामला वाकई सीरियस है। ठीक है! तो फिर मैं आज रात ही की गाड़ी से तुम्हारी ओर निकल रहा हूं।

तो फिर सुनो, तुम्हें बिल्कुल गुप्त रूप से यहां आना है। इस केस की फाइल व कुछ जरूरी बातें मैं तुम्हें एक स्टेशन पहले ही तुम्हारे डिब्बे में आ कर बता दूंगा। तुम मुझे ... लखीमपुर स्टेशन पर डिब्बे के दरवाजे के बाहर खड़े मिलना।

ओ.के. दोस्त!

सुबह चार बजे गाड़ी लखीमपुर पहुंचती थी रमण कुछ जल्दी पहुंच गया था।

चार बजने ही वाले हैं।

निश्चित समय पर विशाल वहां पहुंच गया।

हैलो विशाल कैसे हो?

अच्छा हूं, मगर तुम काफी बदल गए हो?

चलो।

हा...हा...हा... आओ अन्दर चल कर बातें करते हैं। यह रंजन पानी के लिए काफी देर तक रुकता है

भीतर...

हां, अब बताओ... वह सब क्या चक्कर है?

यह उस केस की फाइल है। पढ़ते ही सब कुछ मालूम हो जाएगा।

फाइल पढ़ने के बाद वह बोला-

इसका मतलब है, ठाकुर परिवार का हत्यारा अब गिरिराज का भी कत्ल करने की कोशिश कर सकता है।

हां, लेकिन फिलहाल... वह मेरे बंगले में सुरक्षित है।

तो फिर यह काम तुम जल्दी ही कर दो। अभी मैं यहां ही उतरता हूं। कल नौ बजे सुबह मैं उसे यहीं पर मिलूंगा।

यह बाद में बताऊंगा। पहले तुम बताओ, हां या ना।

यहां मगर... किसलिए

इंस्पेक्टर रमण, क्या तुम किसी बहाने गिरिराज को मुझसे यहां मिलवा सकते हो.. कातिल से छिपा कर...

मिलवा देंगे भाई।

तुम्हारी योजना तो मेरी समझ में नहीं आई, किन्तु मैं वही करूंगा जो तुम कहोगे।

उधर प्रतापगढ़ में इन्स्पेक्टर ने एक योजना तैयार कर ली और गिरिराज को लेकर हवेली पहुंच गया।

देखो सुखिया... एक व्यक्ति पर हमें शक है। शायद उसे मिस्टर गिरिराज पहचानते हैं, इसलिए मैं इन्हें लेकर शहर जा रहा हूं। शाम से पहले लौट आऊंगा।

लेकिन जैसे ही वे जीप के करीब पहुंचे...

जा चला जा, वरना तू भी नहीं बचेगा।

कौन थी, वह बुढिया?

पगली है बेचारी, मैं पहले भी इसे कई बार यहां देख चुका हूं। चलो अब चलें।

रास्ते में इन्स्पेक्टर रमण ने उसे अपनी योजना व डिटेक्टिव विशाल की पहचान भी बता दी।

देखो लखवीमपुर स्टेशन पर तुम डिटेक्टिव विशाल से मिलोगे फिर अगली गाड़ी से वापिस आओगे। अब से दो घंटे बाद मैं तुम्हें यहीं लेने आऊंगा।

ओ.के. इन्स्पेक्टर!

और फिर ठीक नौ बजे-

हैलो मिस्टर गिरिराज।

ओह, आप ही डिटेक्टिव विशाल हैं। आइए अन्दर चलें।

देखो गिरिराज, कातिल को पकड़ने के... लिए मैंने एक स्कीम बनाई है, लेकिन उसके लिए मुझे तुम्हारी मदद की भी आवश्यकता है।
मुझे क्या करना होगा?
इसके बाद डिटेक्टिव विशाल उसे योजना... समझाने लगा।
योजना सुनाने के बाद...
इस समय तुम्हारी जान को खतरा है। जो मैं कहता हूं, वही करो।
मगर आप...
तब तक ट्रेन प्रतापगढ़ की तरफ चल पड़ी थी।
जब गाड़ी प्रतापगढ़ पहुंच कर रुकी-
हैलो गिरिराज कर्नल विशाल नहीं आए?
वह अगली गाड़ी से आ रहे हैं।
पर स्टेशन से बाहर निकलते ही...
प्रतापगढ़
DRATA
हा...हा...हा... लौट आए तुम। आखिर मौत तुम्हें यहां दुबारा खींच ही लाई।
क...कौन हो तुम?
मगर बुढ़िया उसका उत्तर देने के लिए वहां रुकी नहीं थी। दोनों जीप में जा बैठे। इन्स्पेक्टर रमण ने जीप आगे बढ़ा दी।
मुझे यह बुढ़िया रहस्यमयी लगती है।
नहीं पगली है। हवेली में हुई घटनाओं के कारण ऐसे बोलती है।

अब हम कहां चल रहे हैं?
मेरे घर।

मगर मैं हवेली जाना चाहता हूं। वहां मेरा काफी सामान है। उसे... समेट कर कल सुबह ही यहां से चला जाऊंगा।
जैसी तुम्हारी मर्जी, लेकिन वहां तुम्हें खतरा है।

मेरे पास हर खतरे से निबटने के लिए यह रिवाल्वर है।

हवेली पहुंच कर रमण ने जीप रोक दी-
सावधान रहना।
ओह, एक रात ही की बात है। फिर तुम्हारे सिपाही भी तो हैं।
ओह, मालिक आ गया।

इन्स्पेक्टर के जाने के बाद-
सुखिया, तुम सर्वेंट क्वार्टर की बजाये मेरे बगल वाले कमरे में सो जाओ।
ठीक है मालिक!

सुस्विया के जाते ही गिरिराज अपने कमरे में जाकर पलंग पर लेट गया।

वह पागल बुढ़िया...। क्या, वह वास्तव में पागल है या फिर कोई और चक्कर है?

आधी रात के बाद एक जबर्दस्त चीख ने उसकी नींद तोड़ दी–

ईईईऽऽऽ

अरे सुस्विया की चीख। उसकी जान खतरे में लगती है।

लेकिन इससे पहले कि वह दरवाज़ा खोल कर अन्दर घुसता। एक व्यक्ति उससे आ टकराया –

ओह!

गिरिराज उसे देख कर बुरी तरह चौंका–

त...तुम। कातिल, अब नहीं बचोगे।

पंजे वाले व्यक्ति ने एकाएक अपने सिर की टक्कर गिरिराज के चेहरे पर जड़ दी–

ठाक

उफ़्फ़

और खुद को उसके पंजे से मुक्त करा कर एक ओर को भागा।

गिरिराज रिवाल्वर निकाल कर उसके पीछे-पीछे भागा-

रुक जाओ वरना गोली मार दूंगा।

मगर जब वह नहीं रुका तो गिरिराज ने फायर कर दिया-

धांय

मगर गोली उसका कुछ न बिगाड़ सकी थी। वह रुक मोड़ पर घूम चुका था और जब गिरिराज वहां पहुंचा...

अरे! कहां गया?

अब उसने आसपास का पूरा इलाका छान मारा किन्तु कातिल उसे कहीं दिखाई नहीं दिया-

उफ्फ! उसे ज़मीन खा गई या आसमान निगल गया। खैर, सुरिंदर की खबर लेता हूं।

इतने में हवेली के पहरे पर तैनात सिपाही दौड़े चले आए

क्या हुआ? वह फायर किस ने किया?

मैंने, ... किन्तु कातिल बच कर निकल भागा।

ओह!

अब तुम जाओ। तुम्हारी जरूरत हुई तो बुला लूंगा।

फिर गिरिराज सुरिंदर के कमरे में पहुंचा-

क...क्या पकड़ा गया मालिक?

नहीं, लेकिन उसने तुम पर हमला क्यों किया?

मैं क्या जानूं छोटे मालिक? वह तो मुझे मार ही डालता, किन्तु तभी आपके कदमों की आवाज़ सुनकर वह भाग निकला।

कब तक बचता रहेगा वह। एक न एक दिन उसे कानून के जाल में फंसना ही होगा।

मगर वह अन्दर आया कैसे? क्या तुमने दरवाज़ा अन्दर से बन्द नहीं किया था?

किया था... शायद वह पहले से ही कमरे में छिपा हुआ था?

ओह।

हुम्म ! मगर अब तुम सावधान रहना।

ठीक है छोटे मालिक।

फिर गिरिराज अपने कमरे में आ गया-

कहीं इन सब घटनाओं में सुखिया का तो हाथ नहीं है?

नहीं-नहीं। वह ऐसा नहीं कर सकता। मुझे उस पर शक नहीं करना चाहिए।

और उस रात कोई घटना नहीं घटी —।

सुबह उसे इन्स्पेक्टर रमण ने आकर जगाया-

हैलो गिरिराज! सुखिया बता रहा था कि रात कातिल से आपका टकराव हुआ।

हां किन्तु वह भाग निकला।

मैं आपको बताने ... आया था कि अभी पोस्ट-मार्टम नहीं हो पाया है। शायद दो तीन दिन लग जायें।

कोई बात नहीं, इन्स्पेक्टर। तब तक मैं यहीं रहूंगा।

जैसी तुम्हारी मर्जी, मगर कल मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता था गिरि... तुमने समय ही नहीं दिया। क्या आज बताओगे कि ट्रेन में डिटेक्टिव विशाल से तुम्हारी क्या बातचीत हुई?

माफ करना इन्स्पेक्टर साहब। विशाल साहब ने कुछ भी बताने से इंकार किया था। आपसे मिलने पर ही वे आपको सारी बात बता देंगे।

मगर उन्हें तो कल शाम ही आ जाना था?

इसमें मैं क्या कह सकता हूं!

अच्छा तो अब मुझे इजाजत दो।

इन्स्पेक्टर रमण ने जैसे ही दरवाजा खोला...

त... तुम?

चाय लाया था...आप जा रहे हैं?

यह सुखिया कहीं दरवाजे पर खड़ा हमारी बातें तो नहीं सुन रहा था?

अब चाय पीकर ही जाना...

चाय रख कर सुखिया वहां से चला गया...

सुखिया कब से काम कर रहा है हवेली में?

करीब पच्चीस बरसों से। कहीं तुम उसी पर तो हत्यारा होने का शक नहीं कर रहे हो?

हमारा काम ही हर एक पर शक करना है मिस्टर गिरिराज। जरूरत पड़ने पर तो हम पुलिस वाले अपने बाप को भी शक की निगाहों से देखते हैं।

हा...हा... हा...

अरे हां, इन्सपेक्टर साहब। उस पागल बुढ़िया के विषय में जानने की बड़ी उत्सुकता है मेरी।
वह कौन है यह तो कोई नहीं जानता, लेकिन पिछले छः महीनों से उसे गांव के पुराने खंडहर में रहते देख रहा हूं।
सुना है... उसका एक जवान लड़का था, जो कुछ माह पहले घर छोड़ कर कहीं चला गया था। उसी के गम में पागल उसे ढूंढती भटकती हुई बुढ़िया यहां आकर रहने लगी।
पर वह यहां ही क्यों आई? क्या उसे पता था कि उसका लड़का भाग कर इसी गांव में आया है?
यह मात्र संयोग हो सकता है।
...अच्छा अब काफी समय हो गया है। मुझे चलना चाहिए।
ओ.के. सुखिया, साहब को बाहर तक छोड़ आओ।
बहुत अच्छा छोटे मालिक।
फिर गिरिराज भी तैयार होकर बाहर निकल आया–
आप कहीं जा रहे हैं, छोटे मालिक?
हां सुखिया, खाली हवेली काटने को दौड़ती है। गांव का एक चक्कर लगा लूंगा तो समय आसानी से कट जायगा।

खूनी हवेली का रहस्य
तुम भी सावधान रहना।
हवेली से पुराने खंडहर अधिक दूर नहीं थे।
न जाने क्यों ... वह बुढ़िया मुझे रहस्यमयी सी लगी। कहीं ये सब कत्ल...। नहीं-नहीं बुढ़िया में इतनी हिम्मत तो नहीं दिखती। आज उससे मिल कर ही कुछ पूछकर देखता हूं।
मगर अभी उसने खंडहर में कदम ही रखा, था कि...
हा...हा...हा... भाग जा.... वरना तू भी नहीं बचेगा। हा...हा...हा...
तुम, मैं जानता हूं कि तुम पागल नहीं हो। बताओ, तुमने यह स्वांग क्यों रच रखा है?
हा...हा...हा... अपनी जान की सलामती चाहता है तो शहर छोड़ कर भाग जा वरना नहीं बचेगा हा...हा...हा...
जब तक अपने भाइयों तथा पिताजी के हत्यारों को फांसी पर झूलता हुआ न देख लूं, मैं यह हवेली छोड़ कर कहीं नहीं जाऊंगा।

खूनी हवेली का रहस्य

हा...हा...हा... पागल मर जाएगा...

लेकिन तभी...

धम्म

अरे! यह आवाज़ कैसी?

एकाएक किसी व्यक्ति को वहां से भागते देख वह बुरी तरह से चौंक कर उसके पीछे लपका —

रुक जाओ! मैं कहता हूं, रुक जाओ!

स... सुमित्रा! तुम यहां और ये छुरा?

हां मालिक! आपको खंडहर की ओर जाते देख मैं डर गया कि कहीं कातिल आपको भी कोई नुकसान न पहुंचा दे, इसलिए...

...ये छुरा लेकर मैं भी आपके पीछे-पीछे यहां तक पहुंच गया। अगर कातिल मुझे यहां दिख जाता तो मैं उसे छोड़ता नहीं, बेटे मालिक!

उसके बाद दोनों वापस हवेली की ओर लौट पड़े

फाइल के मुताबिक सुमित्रा ने अपने बयान में पच्चीस वर्ष पहले एक औरत के साथ झगड़े का जिक्र किया था हुम्म... मुझे अभी फिर इन्स्पेक्टर से मिलना होगा।

उसने सुखिया की हवेली भेज दिया और खुद पुलिस स्टेशन जा पहुंचा-

अरे आप! कुछ देर पहले तो हम मिले थे?

एक जरूरी काम याद आ गया था इसलिए चला आया।

कैसा काम? मिस्टर गिरिराज?

मुझे आज से पच्चीस साल पहले की उस घटना का ब्यौरा चाहिए, जिसमें पिताजी के खिलाफ कोई रिपोर्ट इत्यादि दर्ज की गई है।

मैं समझा नहीं?

उस झगड़े के बाद से सुखिया ने उस औरत को इस गांव में नहीं देखा। पुरानी रिपोर्टस देख कर मैं जानना चाहता हूं कि कहीं उस औरत ने पिताजी के खिलाफ कोई रिपोर्ट आदि तो नहीं लिखवाई थी...।

और अगर लिखवाई थी तो क्यों... क्या उसे न्याय मिला था?

इससे क्या होगा?

थाना

यह मैं समय आने पर बताऊंगा। पहले आप ये बताइए, काम होगा या नहीं।

पच्चीस साल पहले के रिकॉर्ड में से एक ऐसी रिपोर्ट को ढूंढ निकालना रेत के ढेर में से सूई... निकालने के बराबर होगा, मिस्टर गिरिराज।

फिर भी मैं पूरी कोशिश करूंगा, लेकिन इस काम में आपको मेरी मदद करनी होगी।
मैं करूंगा इन्सपेक्टर साहब! अगर हम सफल हो जाते हैं तो हत्यारे के बहुत ही करीब होंगे हम।
RECORD ROOM
रिकॉर्ड कक्ष
आओ रिकार्ड-रूम में चलें।
फिर वे सरगर्मी से उस फाइल को खोजने में लग गए –
पूरे दो घंटों के कठोर परिश्रम के पश्चात –
ये मिल गई, यही है वह फाइल...
ओह! लाओ मुझे दिखाओ।
THAKUR VIRSING
ठा॰ वीरसिंह

...मैं कानून से प्रार्थना करती हूं कि मुझे और मेरे बच्चे बलजीत को न्याय दिलवा कर ठाकुर को दंडित किया जाए।
रुक्मणी
फाइल पढ़ने के बाद...
THAKUR ...NG
उस समय रुक्मणी नाम की औरत को शायद न्याय नहीं मिल पाया था। साफ लिखा है साफ, कि आरोप बेबुनियाद थे। रुक्मणी ने अपनी मर्जी से घर छोड़ा।
...और इस प्रकार इस फाइल को बन्द कर दिया गया। शायद पिताजी ने केस खत्म करवाने के लिए उस समय के थाना इंचार्ज को मोटी... रिश्वत दी हो।
इसमें थानाध्यक्ष महेश दास का नाम लिखा है, जिसकी गतवर्ष एक दुर्घटना में मृत्यु हो चुकी है
लेकिन आपने कहा था, अगर फाइल मिल गई तो... क्या हत्यारे को तुम पहचान चुके हो?
ओह!
शायद उसका नाम जान चुका हूं मैं। पर आपको अभी इन्तजार करना पड़ेगा?
लेकिन अगर कातिल ने आपको कोई नुकसान पहुंचा दिया तो क्या होगा? आपको मुझे कातिल का नाम बता देना चाहिए

उसी रात...

आज रात मुझे सतर्क रहना होगा?

गिरिराज का अनुमान बिल्कुल ठीक था-

एक भयानक आदमी चोरों हुए गिरिराज के पास पहुंचा और झपट कर उसका गला दबाने लगा-

मगर गिरिराज के जिस्म में कोई हरकत नहीं हुई। यह देख वह भयानक व्यक्ति बुरी तरह चौंक पड़ा-

लेकिन हकीकत यह थी।

ठीक उसी पल

तुम्हारा खेल खत्म हो गया प्यारे।

हा...हा...हा... तुम्हारा यह तमंचा मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता गिरिराज।

अगले ही पल उसने हाथ में पकड़ा पुतला गिरिराज पर उछाल दिया-

हा... हा... हा... हा...

उफ्फ!

इसी के साथ उस भयानक व्यक्ति ने वहां से भागना चाहा मगर...

इतनी आसानी से तुम नहीं भाग सकते कलजीत।

आ...हा।

फिर गिरिराज उस पर टूट पड़ा
धम्म
खड़ाक
गिरिराज ने सर की टक्कर का वार किया—
लेकिन जल्दी ही वह भयानक शक्ल-सूरत वाला इन्सान सम्भल गया और...
टिशुं
मौका देख कर वह पुनः भागा परन्तु गिरिराज ने अड़ंगी लगा दी—
ओह

उसके बाद गिरिराज ने उसे सम्भलने का कोई अवसर नहीं दिया। शीघ्र ही वह बेदम हो गया।

सुनो हत्यारे, मैं गिरिराज नहीं हूं। बल्कि ... प्राइवेट डिटेक्टिव विशाल हूं।

यह देखो! तुम्हें रंगे हाथों पकड़ने के लिए मुझे यह भेष धारण करना पड़ा। अन्यथा तुम गिरिराज का भी खून करने में सफल हो जाते।

तभी बाहर कदमों की आहटें सुनाई दी और साथ ही सुखिया की आवाज़ भी-

छोटे मालिक, दरवाजा खोलिए, छोटे मालिक।

विशाल ने आगे बढ़ कर दरवाज़ा खोल दिया-

ओह! यह सब क्या है? कौन हो तुम? और छोटे मालिक कहां है?

तुम्हारे छोटे मालिक ठीक है सुखिया। मैं जासूस विशाल हूं और...

ये रहा तुम्हारे मालिकों का हत्यारा।

तुम तुरन्त इन्स्पेक्टर रमण और बाहर पहरे पर खड़े सिपाहियों को भेज दो।

क्या?

आधे घंटे बाद पुलिस फोर्स उस हवेली को चारों ओर से घेर चुकी थी। फिर जब इन्स्पेक्टर रमण हवेली के भीतर पहुंचा तो सारे हैरत के उछल पड़ा-

त... तुम?

यस इन्स्पेक्टर, कातिल को पकड़ने का यही तरीका था।

मन ही मन विशाल की प्रशंसा करने के बाद इन्स्पेक्टर रमण कातिल से मुखातिब हुआ-

हां तो बताओ तुम कौन हो और ठाकुर परिवार से तुम्हारी क्या... दुश्मनी थी?

सुनो, तुम्हें शायद सुन कर हैरानी हो कि बलजीत ठाकुर की पहली पत्नी रुकमणी का पुत्र है।

क्या? वही रुकमणी ...जिसे शायद आप ने पच्चीस साल पहले ठाकुर ने ठुकरा दिया था।

हां और जानते हो रुकमणी कौन है... जी हां... वही पागल बुढ़िया...

खबरदार! जो मेरी मां को पागल कहा...

नहीं करेंगे... लेकिन अब सारी कहानी हम तुम्हारे मुंह से सुनना चाहेंगे।

अब तक बलजीत समझ चुका था कि कुछ भी छिपाना बेकार है। अतः उसने कहना शुरू किया –

मेरे जन्म लेने से पहले ठाकुर साहब मां को बहुत चाहते थे। पर दुर्भाग्य से जब मैं पैदा हुआ... मेरी कुरूप सूरत को देख कर ठाकुर साहब को मुझसे नफरत हो गई।

मैं इस बच्चे को हर्गिज-हर्गिज नहीं अपना सकता।

इस पर दया कीजिए ठाकुर साहब कुछ भी हो ये हमारी औलाद है।

ऐसी औलाद से बेऔलाद रहना ही अच्छा... इसे हमें दो ठकुराइन। हम इसे किसी कूड़े के ढेर पर फेंक आएंगे।

नहीं मैं इसे अपने से अलग नहीं होने दूंगी।

अगर तुम्हारी यही इच्छा है तो कान खोल कर सुन लो ठकुराइन! इस घर में या तो ये बच्चा रहेगा या हम।

ठ... ठाकुर साहब!

अगर आपकी यही इच्छा है ठाकुर साहब। तो एक बात आप भी सुन लीजिए। मैं इस बच्चे को इसका हक... दिलवाने के लिए कानून का दरवाजा खट-खटाऊंगी।

कानून के हर दरवाजे की चाबी हमारी तिजोरी में है बेवकूफ ! हम जब चाहें तुम्हारे लिए कानून के दरवाजे बन्द करा सकते हैं और अब हम तुम्हारी सूरत भी नहीं देखना चाहते। चली जाओ इस मनहूस के साथ इस हवेली की हदों से दूर।

फिर क्या हुआ?

वही... जो ठाकुर साहब ने कहा था। मां की ओर से दायर मुकदमा झूठे गवाहों की गवाहियों और मां पर बदचलनी का आरोप लगा कर बन्द करवा दिया गया। मेरी मां मुझे गोद में उठाए दर-दर भटकती रही...

... बचपन से जवान होने तक मैंने कभी मां के होठों पर मुस्कराहट नहीं देखी थी और फिर एक दिन मैंने अपनी कसम देकर मां के दिल का दुख जान ही लिया। उस दिन से मेरे दिल में ठाकुर खानदान से भयानक प्रतिशोध की ज्वाला सुलग उठी। मैं घर से भाग कर यहां आ गया।

मां नहीं चाहती थी कि मैं ऐसा करूं। अतः वो पगलाई सी मेरे पीछे यहां तक आ गई। तब मैंने उन्हें समझा तो लिया, मगर मां का दिमागी सन्तुलन बिगड़ गया और वे पागल सी बनी सड़कों पर घूमने लगी। रात को रास्तों में पड़ी अपनी मां को... मैं खंडहर में उठा लाता था...।

मां ने मुझे इस हवेली के भीतर बने गुप्त रास्तों के बारे में बताया था। मैं हत्या करके इन्हीं रास्तों से खंडहर की ओर भाग निकलता था। पुलिस को गुमराह करने के लिए मैंने इन पंजों का इस्तेमाल किया।

तुम्हारी मां अब खंडहर में ही होगी?

हां!

खूनी हवेली का रहस्य

खंडहर पहुंचते ही...

नहीं, ओह मां तुमने यह क्या किया?

बुढ़िया के हाथ में कोई पर्चा दबा था। विशाल ने उसे खोल कर पढ़ना शुरू किया-

मेरे बेटे, मैं तो उसी दिन मर गई थी, जब ठाकुर साहब ने मुझे व तुझे ठुकराया था। दूसरी बार जब तूने ठुकराया की हत्या कर दी। और अब मैं थक चुकी हूं। अन्तिम बार हमेशा-हमेशा के लिए मर रही हूं। तेरी अभागी मां—

फिर जब विशाल ने प्रतापगढ़ में ही रह रहे गिरिराज के पास पहुंच कर उसे बलजीत के बारे में विस्तार से बताया तो बरबस ही उस की आंखें भर आईं—

मिस्टर विशाल मैं एक बार... बलजीत से मिलना चाहता हूं।

जरूर गिरिराज!

और हवालात में

बलजीत, मेरे भाई। यह तुमने क्या किया?

क...कौन, ओह तुम? गिरिराज मैं पागल हो गया था।

मुझे अफसोस है, बलजीत कि पिताजी के कारण बड़ी मां को और तुम्हें इतने दुख झेलने पड़े।

लेकिन वह सिर्फ तुम्हारी ही नहीं बल्कि मेरी भी मां थी। मैं ही उनका पूरे सम्मान के साथ क्रियाकर्म करूंगा मेरे भाई...

काश यह कहानी फिर कभी न दोहराई जाए।

दूसरे दिन एक साथ चार चितायें सजाई गईं। अपने भाइयों की चिता के साथ बलजीत की मां की चिता को आग देते हुए शेरसिंह एकाएक ही सिसक उठा—

माफ कर देना मां। काश, तुम्हारे जीवित रहते मैं तुम्हें अपनी मां कहने का अधिकार प्राप्त कर सकता।

केस खत्म हो चुका था, अतः..

अब मुझे भी चलने की इजाज़त दो... मिस्टर रमण।

चले जाना... गाड़ी आने में पूरे बीस मिनट हैं, लेकिन एक बात तो तुमने बताई ही नहीं कि तुम्हें बलजीत के हत्यारा होने का शक कैसे हुआ?

विशाल ने बताया-

जब तुमने मुझे उस पगली बुढ़िया के बारे में बताया जो अपने बेटे को तलाश करते हुए यहीं आ कर बस गई तो एकाएक ही बुढ़िया मुझे रहस्यमय लगने लगी... फिर तुम्हारी फाइल में उसकी जवानी का फोटो देख कर मैं चौंक पड़ा... और उसका हवेली के इर्द-गिर्द घूमना... ठाकुर द्वारा उसे ठुकराया जाना, फिर दूसरी शादी कर लेना, इत्यादि बातों ने मेरे शक को पुष्टि कर दी और बलजीत हत्यारे के रूप में मेरे सामने आ खड़ा हुआ।

समाप्त